ISSN 2582-8606
अर्द्धवार्षिक पत्रिका
फिरकी बच्चों की
Firkee Bachchon Ki
वर्ष 3 अंक 1 जून 2021
फिरकी 1
बच्चों की

आवाज़ें

पानी की आवाज़ें हैं

या आवाज़ों में पानी,

झाड़ी बोले या झाड़ी में

झींगुर और झिंगुरानी।

प्रभात

चित्रांकन— निहारिका शेनॉय

इस अंक में

बसंत

क्या बसंत का
मौसम आया,
फूल नहीं खिलते
इस बार।
सूखी डाल पे
तितली बैठी,
गुमसुम पढ़ती है
अखबार।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
चित्रांकन — शुभम बंसल
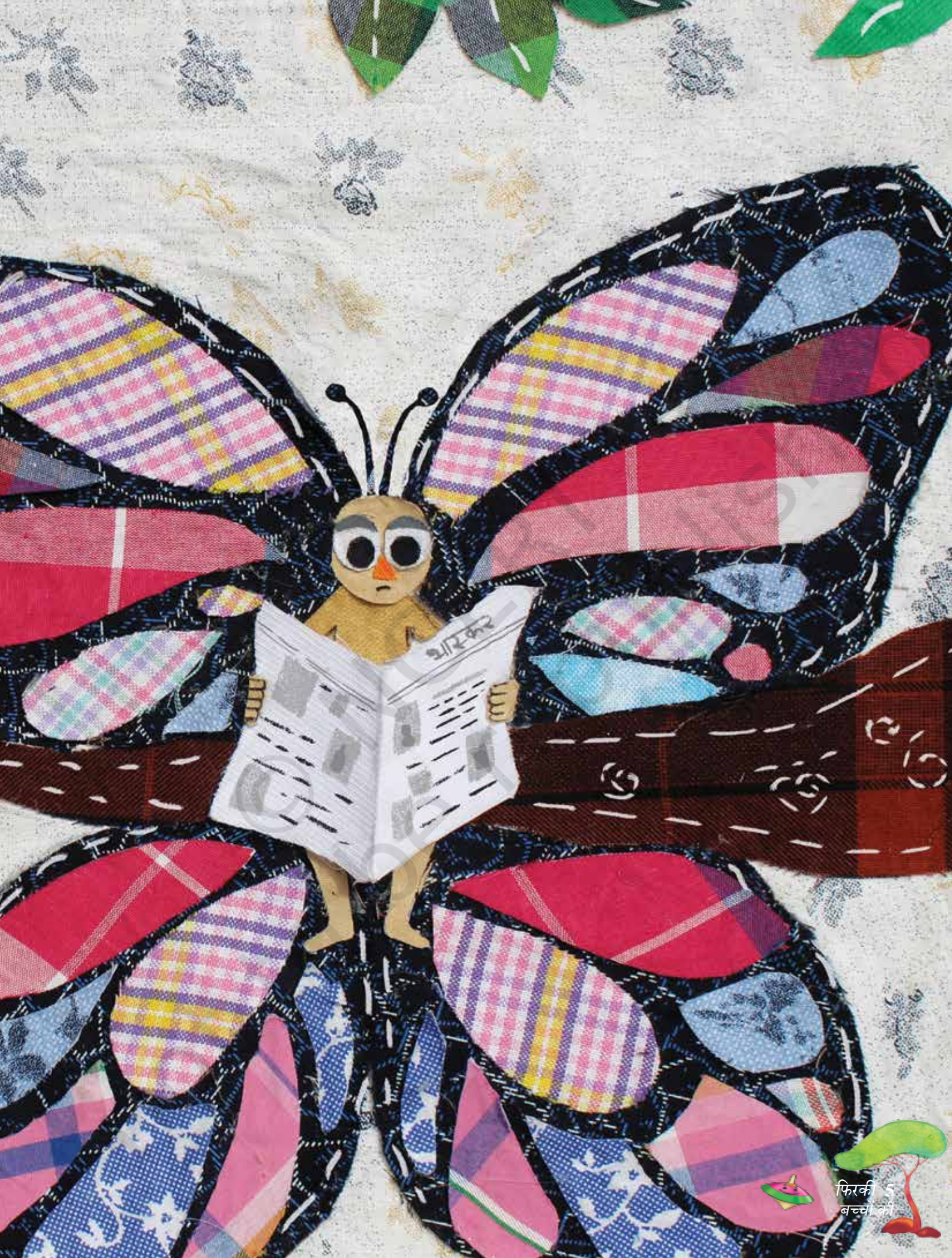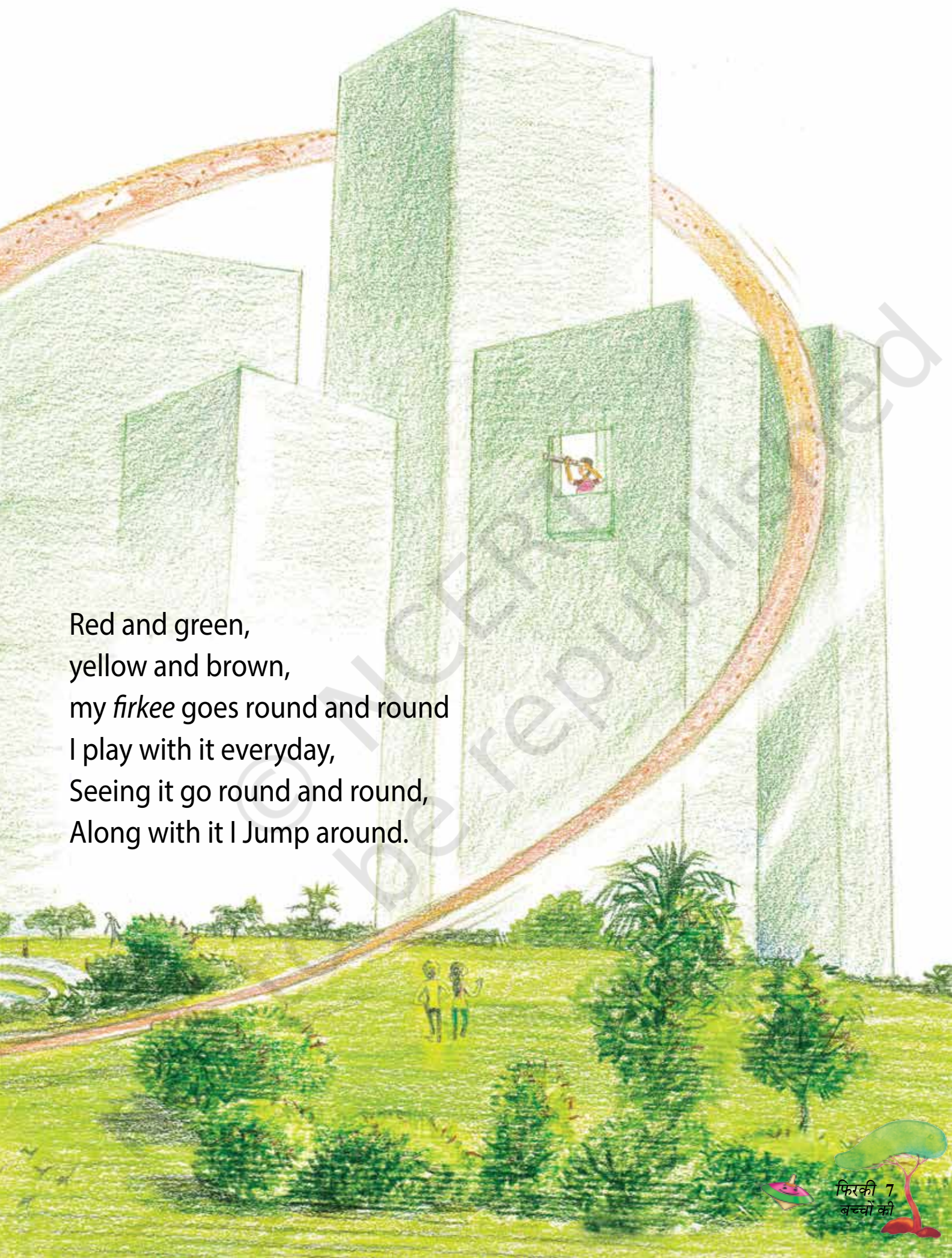
Firkee

Kirti Kapur
Illustration — Shashi Shetye

Red and green,
yellow and brown,
my *firkee* goes round and round
I play with it everyday,
Seeing it go round and round,
Along with it I Jump around.

टाँय टूँ

एक था तोता, एक था तीतर,
टाँय टूँ, टाँय टूँ दोनों आए भीतर।
टाँय टूँ, टाँय टूँ दे दो एक दाना,
मैंने कहा— पहले सुनाओ एक गाना।
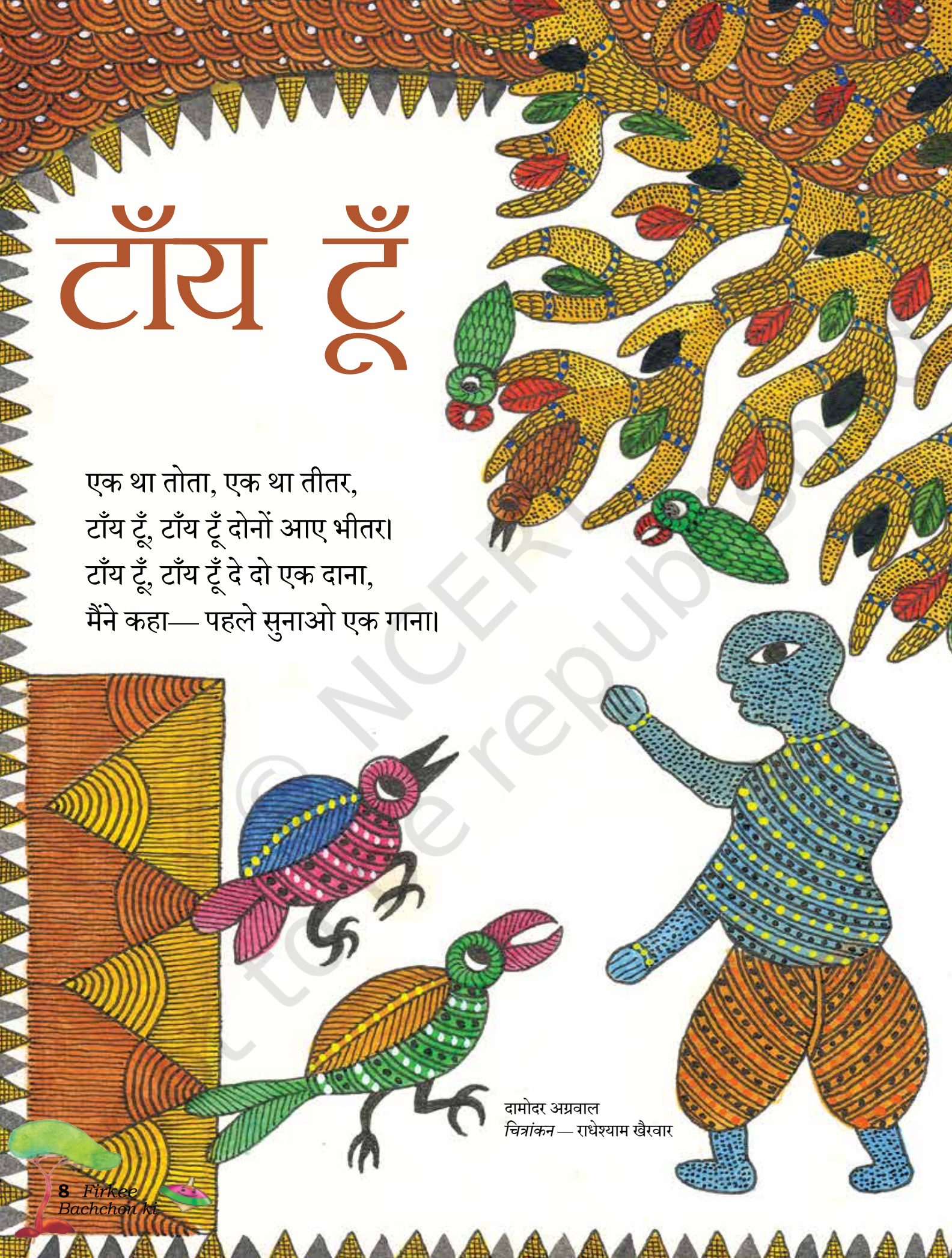
दामोदर अग्रवाल
चित्रांकन — राधेश्याम खैरवार

टाँय टूँ
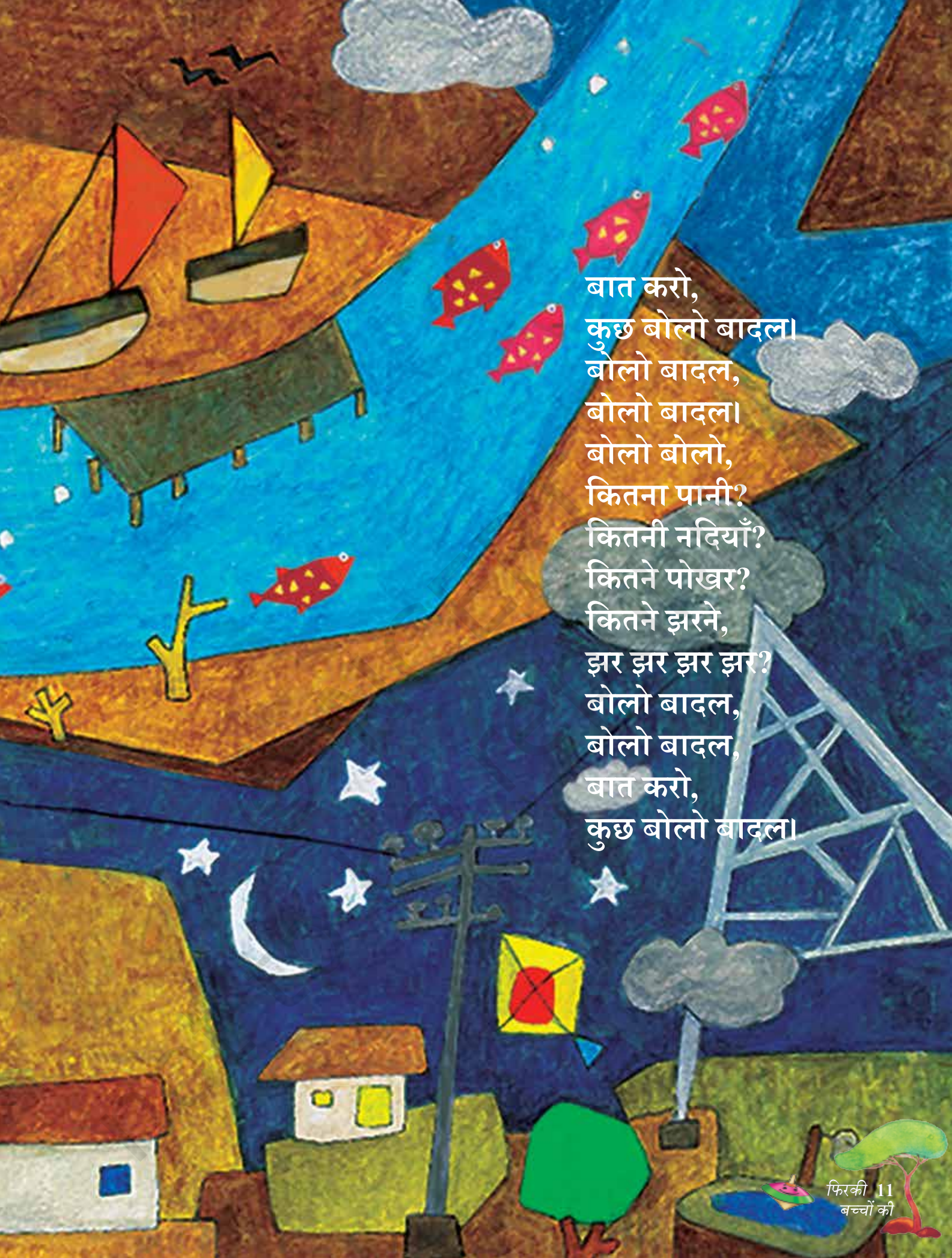
टाँय टूँ, टाँय टूँ दोनों लगे गाने
गाने क्या लगे, मेरे कान लगे खाने।
दाने कुछ फेंक दिए मैंने उनके आगे,
टाँय टूँ, टाँय टूँ करते हुए भागे।
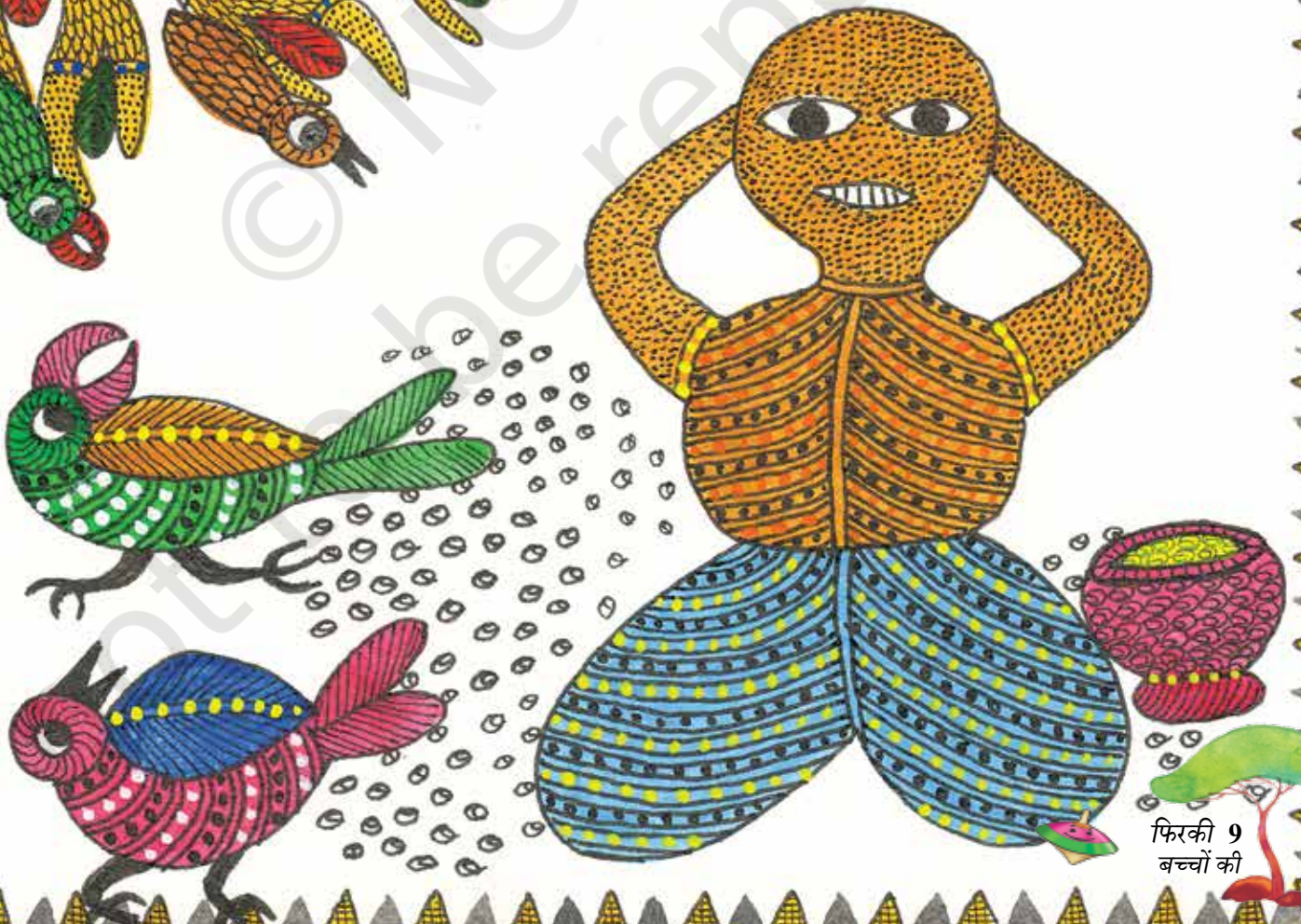
बोलो बादल
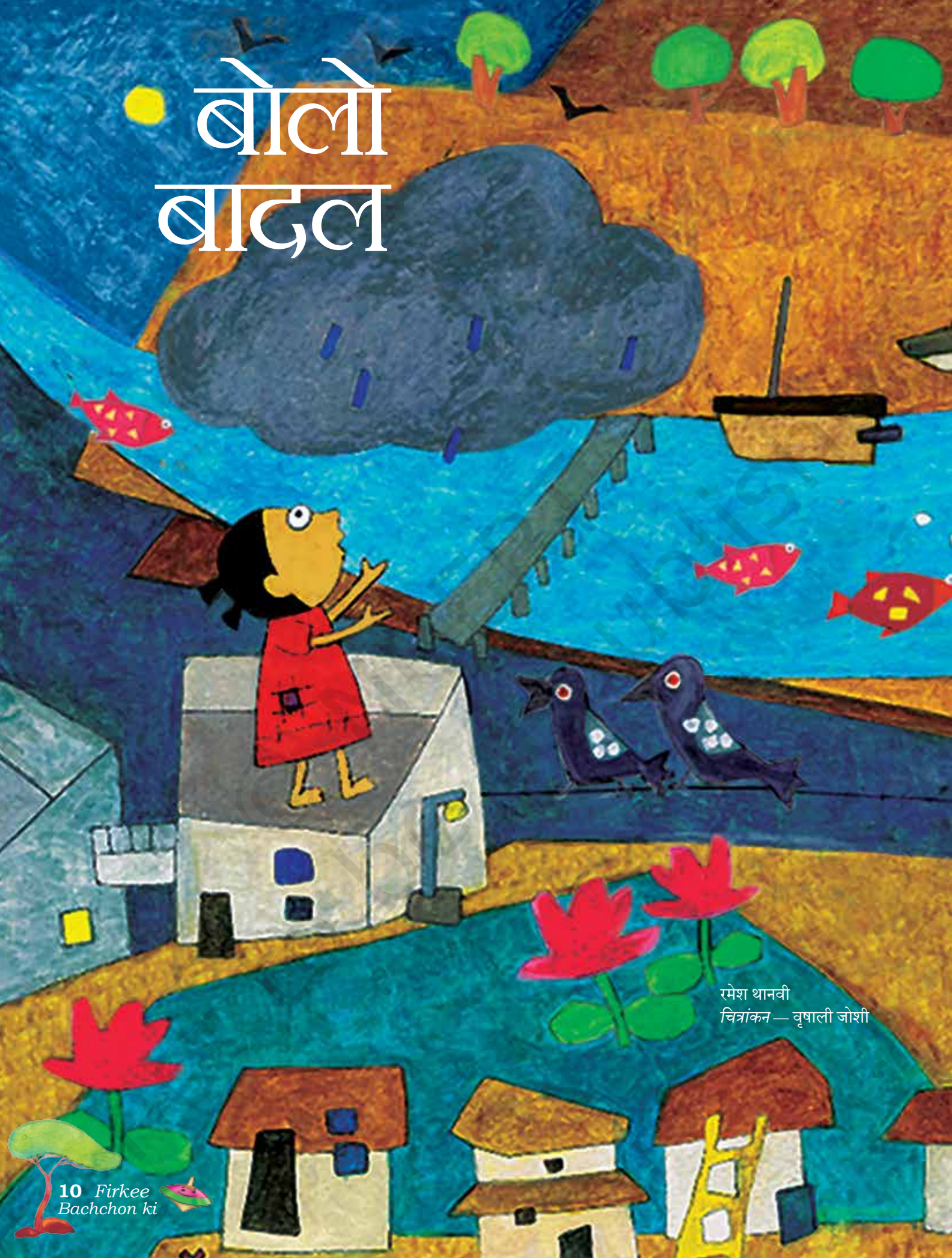
रमेश थानवी
चित्रांकन — वृषाली जोशी

बात करो,
कुछ बोलो बादल।
बोलो बादल,
बोलो बादल।
बोलो बोलो,
कितना पानी?
कितनी नदियाँ?
कितने पोखर?
कितने झरने,
झर झर झर झर?
बोलो बादल,
बोलो बादल,
बात करो,
कुछ बोलो बादल।

बीचों-बीच
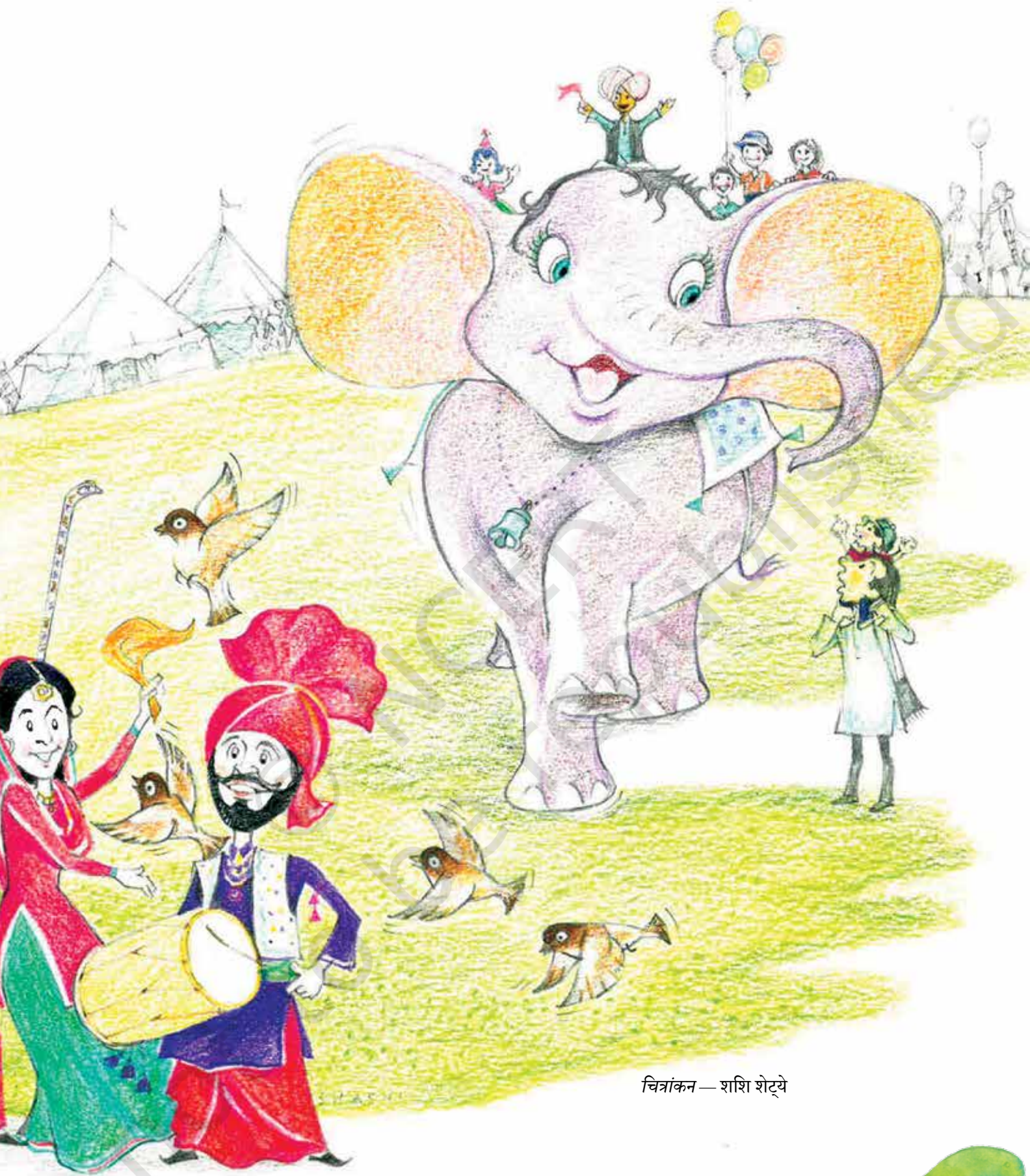
चित्रांकन — शशि शेट्ये

बारिश

एक दिन की बात है। बहुत ज़ोर से बारिश हो रही थी। मैं जा रहा था तो अचानक मेरा पैर फिसल गया। मैं धड़ाम से गिर गया। मेरे सारे कपड़े कीचड़ में सन गए। मुझे डर था कि अब मुझे ऐसी हालत में देखकर माँ ज़रूर गुस्सा होंगी। मुझे चोट लगी सो अलग!
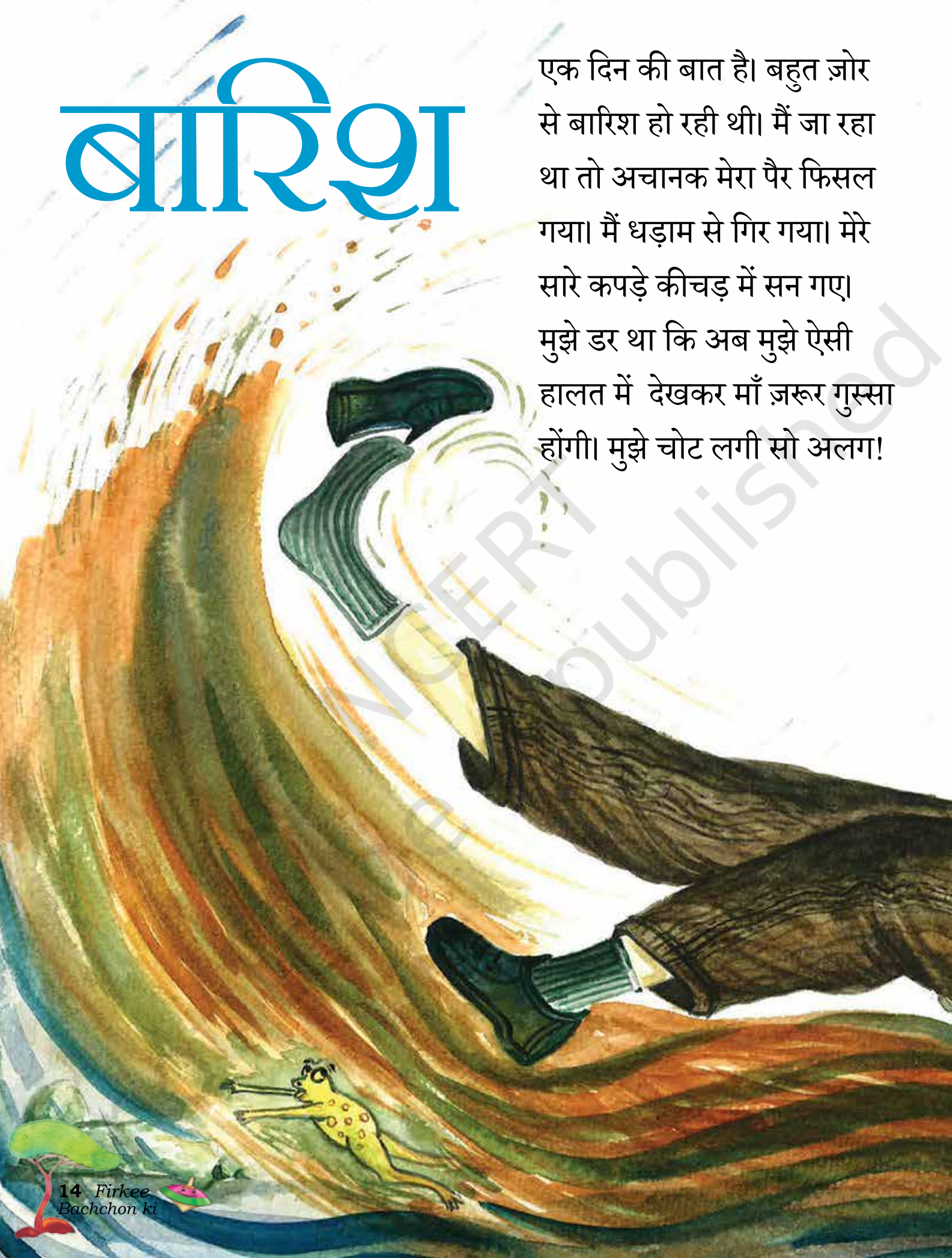
मुझे डर था कि पापा ज़रूर नाराज़ होंगे। मैं थोड़ी देर बारिश के नीचे खड़ा हो गया तो सारे कपड़े धुल गए! लेकिन चोट का क्या करूँ? कुछ सूझ नहीं रहा!

सोनू
कक्षा 5,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जम्मू
चित्रांकन — निखिल खत्री

घूमाघूमी

घूमाघूमी को हम निकले
खूब उड़ाई धूल,
झूमाझूमी करते दीखे
हमें राह में फूल।

चुग्गा चुगती, फुर-फुर उड़ती
चिड़ियों से बतियाए,
गन्ने चूसे, झरबेरी से
बेर तोड़ के खाए।

घूमाघूमी की मस्ती में
निकल गए हम दूर,
जी-भर घूमे जंगल-पर्वत
थक के हो गए चूर।

तभी दिखी इक नदी
नदी में झम-झम कूदे-तैरे,
नदी किनारे बालू के घर
बना-बना के तोड़े।

होने लगी शाम तो
भागे-भागे घर को आए,
घूमाघूमी के किस्से
घर भर को खूब सुनाए।

श्याम सुशील
चित्रांकन — नीलेश गहलोत
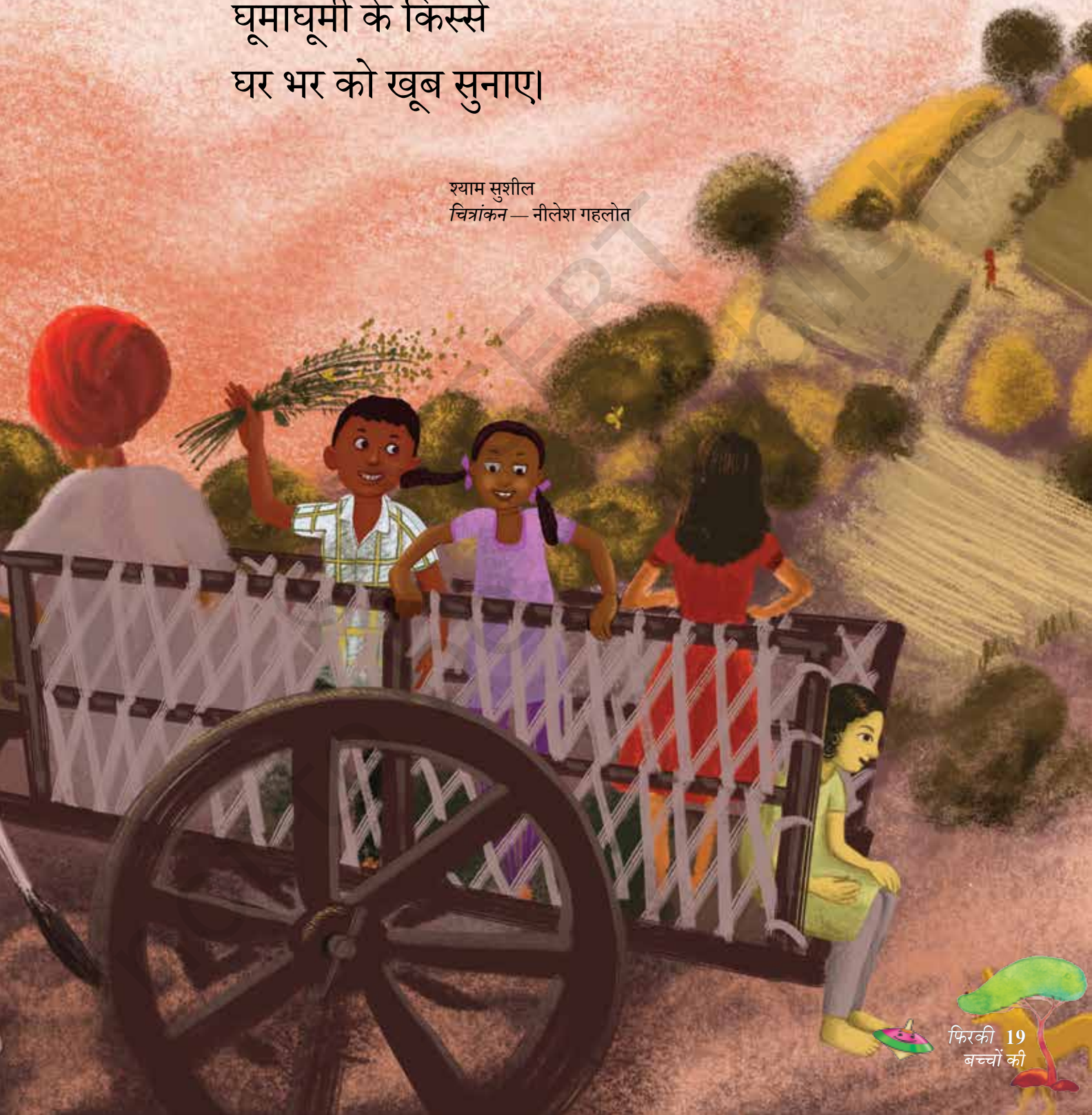
Rain

The rain is raining all around,
it falls on field and tree;
it rains on the umbrellas here
and on the ships at sea.

Courtesy — Robert Louis Stevenson
Illustration — Shubham Bansal

मम्मी का डर

ढम-ढम-ढम,
शोर मचाए हम,
मम्मी को आता देख,
कहीं छुप जाएँ हम,
मम्मी ढूँढे हमको,
और हँसते जाएँ हम।

स्वाति जैन
चित्रांकन — हबीब अली
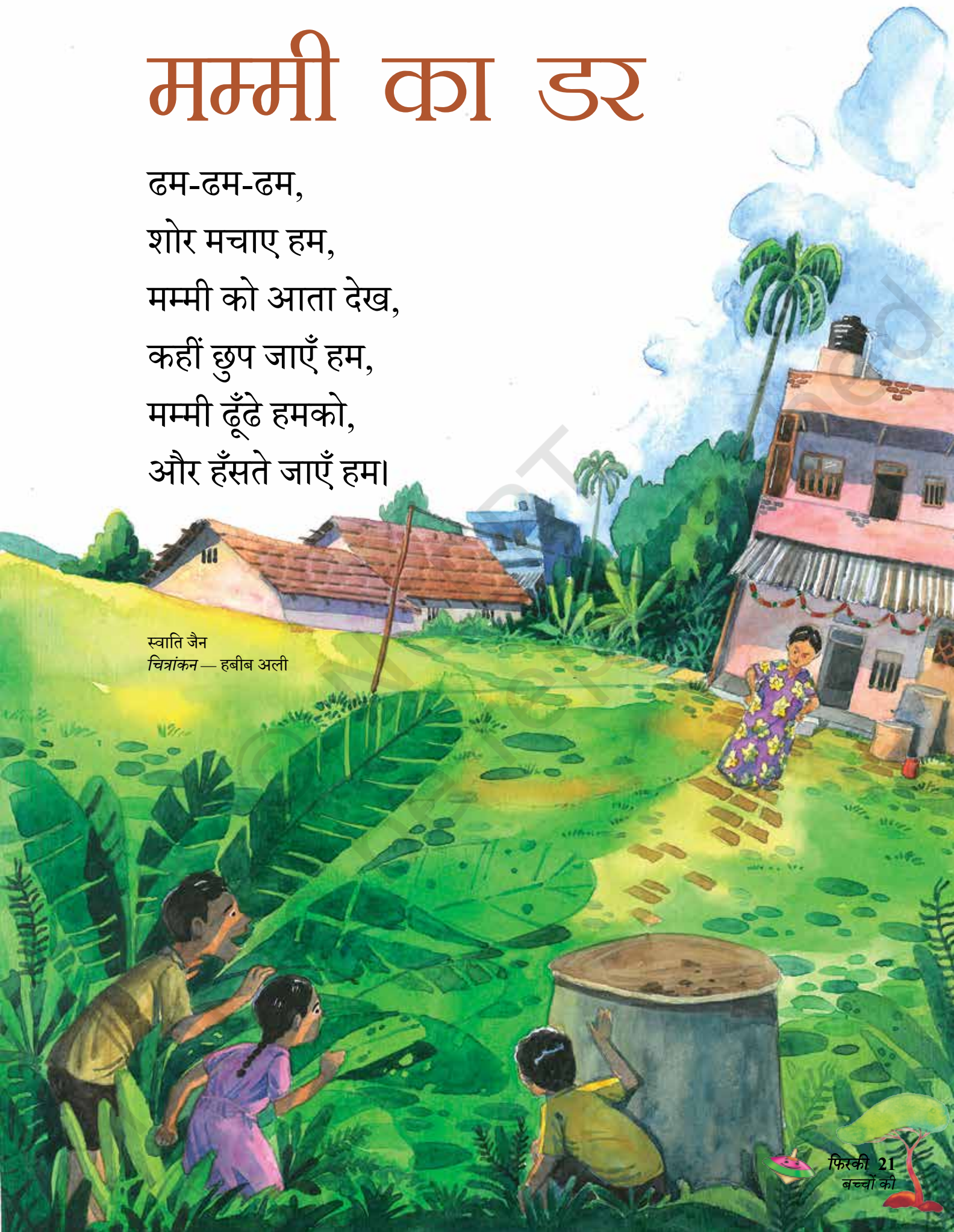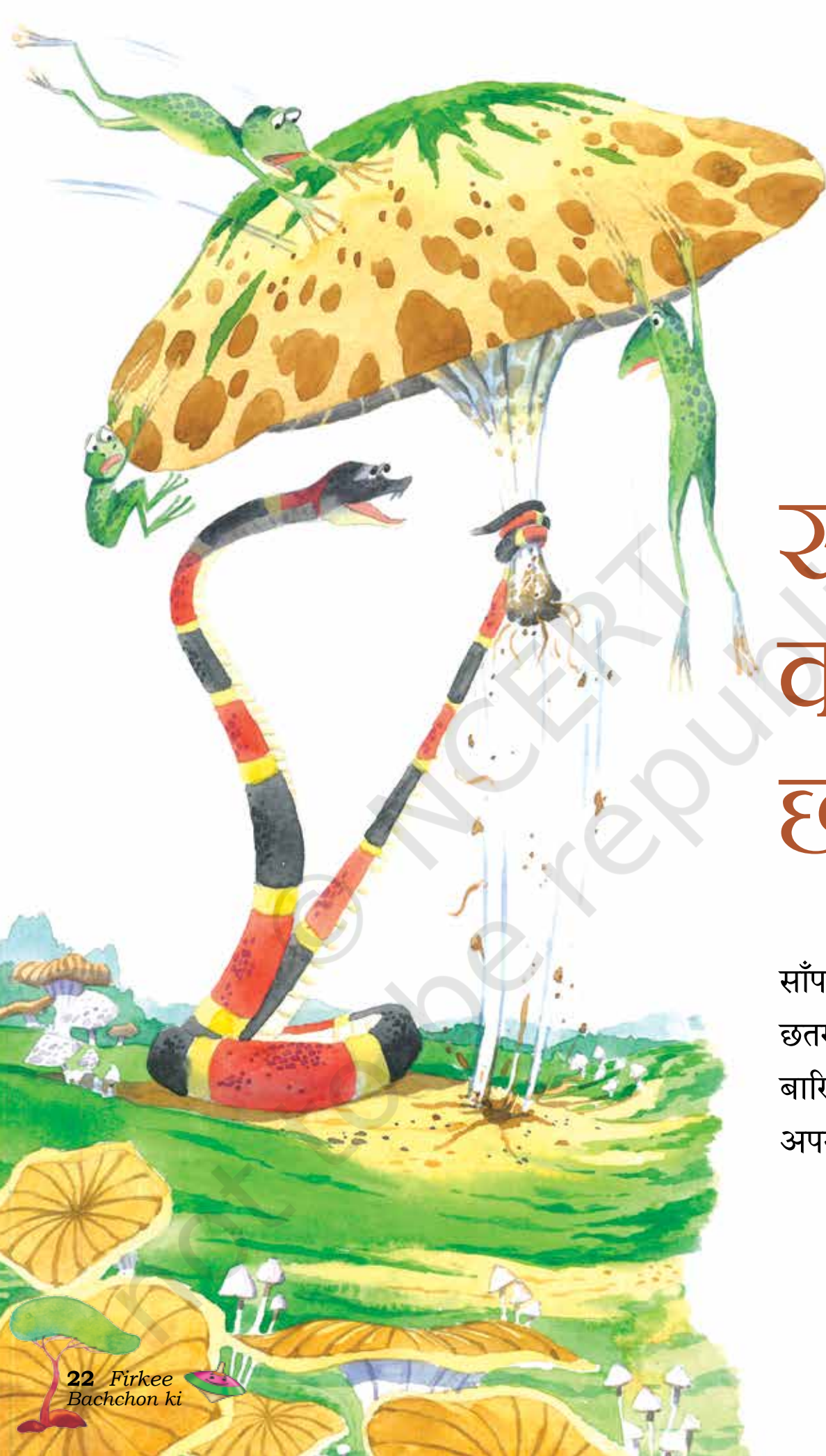
साँप की छतरी

साँप ने कुकुरमुत्ते को,
छतरी समझ के,
बारिश में तान ली,
अपनी समझ के।

प्रभात
चित्रांकन — हबीब अली

देखो, मैंने क्या बनाया!

आर्य राजपूत — कक्षा 1, गोरखपुर (यूपी)

उ. कविनेश — यू.के.जी., श्रीमती एनडीजेए, विवेकानन्द विद्यालय, व्यासरपदी चेन्नई

परी — ऋषिकुलशाला, जयपुर

सार्थक — कक्षा-3, मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, नयी दिल्ली

सुधार — *फिरकी बच्चों की*, जून 2020 (वर्ष 2 अंक 1) में प्रकाशित कविता 'कौन परिंदे' के लेखक श्याम सुशील हैं।

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें

उषा शर्मा (शैक्षणिक संपादक)
कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी. बी. पंत ब्लॉक
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग,
नयी दिल्ली 110016
दूरभाष- 011-26592293
ईमेल— firkeebachchonki.ncert@gmail.com

PD 2T SU

100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-II, नयी दिल्ली - 110 020 द्वारा मुद्रित।

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

₹ 35.00
Registration No. DELBIL/2019.77753

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

बीज

हवा चली तो बीज बो गई,
बारिश आ कर खेत धो गई,
पौधा उगा तो खा गई बकरी,
सालों-साल चली ये चकरी!

हर्षवर्धन कुमार
चित्रांकन — तापोशी घोषाल